आरती

आरती

आरती

@ *प्रकाशक :*
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, दिल्ली

मूल्य : ₹ 10/-

प्राप्ति स्थानः
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052 (भारत)
दूरभाषः 4709 1281, 4709 1280

मुद्रक :
अक्षर प्रिंटर्स
40D, डी.डी.ए. फ्लैट, अशोक विहार-III,
दिल्ली-110 052 (भारत)

चरणसरोज तुम्हारे वंदू कर जोरी...

हिन्दु संस्कृति-सनातन धर्म में अपने इष्टदेव की **'आरती'** के ज़रिए भक्त अपने अंतर के भाव प्रकट करता है। प्रायः सभी मंदिरों में सुबह एवं सायं आरती करने की प्रथा है। यदि हृदय की सच्चाई से मानेंगे, तो एहसास भी कर पायेंगे कि आरती के समय प्रभु साक्षात् आते हैं। उस समय उनकी दृष्टि हम पर पड़ जाये, तो भीतर के कई-कितने ही विकार यूं ही टल जायेंगे। इसके अतिरिक्त घर-परिवार में भी यदि रोज़ आरती करने की रीति अपनाई जाये, तो बालकों में सहज ही धार्मिक विचारधारा उत्पन्न होगी और उनमें धर्म संस्कारों का सिंचन होगा।

भारत में विभिन्न धर्मावलंबी अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषाओं में अपने आराध्य देवी-देवताओं का अभिनंदन करने के लिए आरती-वंदन करते हैं। इसी प्रकार भगवान स्वामिनारायण के समय में सद्गुरु मुक्तानंदस्वामीजी ने भगवान स्वामिनारायण के प्रति अपने भाव प्रकट करते हुए गुजराती भाषा में आरती रची थी।

समय बीतता गया। **गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के संकल्प** एवं **गुरुवर्य योगीजी महाराज की प्रेरणा से गुरुहरि काकाजी महाराज** ने 1967-68 में अपने पसंदीदा पात्र **प.पू. गुरुजी** को उत्तर भारत में स्वामिनारायण का संदेशा व्यापक करने के लिए दिल्ली भेजा। गुरुहरि काकाजी महाराज के आशीर्वाद एवं प.पू. गुरुजी के अथाह परिश्रम से यहाँ सत्संग का विकास होने लगा। उत्तर भारत में तो हिन्दी भाषा ही मुख्यतः बोली जाती है। सो, भगवान श्री स्वामिनारायण की द्विशताब्दी के समय 1981 में

गुरुहरि काकाजी महाराज ने गुजराती **'आरती'** को **श्री नक्श लायलपुरीजी** से हिन्दी में परिवर्तित करवाया था। लेकिन, उस समय गुरुपरंपरा के श्लोक हिन्दी में रुपांतरित नहीं हो पाये थे। काफी समय से हिन्दीभाषी मुक्त इन श्लोकों को समझ पाने में परेशानी महसूस करते थे।

दूसरी ओर—प.पू. गुरुजी के अंतर में एक बात खूब खटकती रहती कि उत्तर भारत में सत्संग को बढ़ता जान कर, प.पू. काकाजी स्वयं सत्संग में तकरीबन हिन्दी में ही बोलते थे। सो, प.पू. काकाजी के स्वधामगमन के बाद, प.पू. गुरुजी ने हिन्दी आरती की कुछ पंक्तियों को गुजराती के अनुसार परिवर्तित किया और साथ ही गुरुपरंपरा के कुछ श्लोक जिनका हिन्दी अनुवाद अन्यत्र मौजूद था, उनके संकलन के साथ-साथ गुजराती श्लोकों की हिन्दी समश्लोकी तैयार की।

बनारस यूनिवर्सीटी के **डॉ. विश्वनाथ पांडेजी, पू. राकेशभाई** एवं **प.पू. दीदी** ने अभिप्राय की इस भक्ति को अदा करते हुए सहयोग दिया। **श्री रतनजी** द्वारा म्यूज़िक कॉम्पोज़ करवा कर पू. राकेशभाई ने आरती रिकॉर्ड करवाई और **पू. शांतिभाई साहेब की प्रेरणा से 'अनुपम मिशन'** के साधक भाइयों ने भी खूब अपनेपन से बहुत ही कम समय में हिन्दी में गोड़ी, प्रार्थना एवं गुरुपंरपरा के श्लोकों की रिकॉर्डिंग करके भेज दिया। और... प.पू. गुरुजी के 74वें प्राकट्य दिन पर, 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के उद्घोष निमित्त पू. कोठारीस्वामिजी

(हरिधाम) के वरद् हस्तों, इस सीडी का उद्घाटन करवा कर हिन्दी आरती का शुभारंभ हुआ था। लेकिन, जैसे कि 13 अगस्त, 2016 को ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के स्वधामगमन के पश्चात्, प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज को इनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी एवं बॅप्स के प्रमुख के रूप में नियुक्त किये जाने पर, उनका श्लोक भी गुरुपरंपरा के श्लोकों में समाविष्ट किया गया। दूसरी ओर, हमारे संतभगवंत प.पू. साहेबजी के श्लोक में भी 'मिशन' से परिवर्तन हुआ है, यह जान कर प.पू. गुरुजी ने आरती एवं श्लोकों को पुनः रिकॉर्ड करवाने की इच्छा व्यक्त की। अतः **पू. शांतिभाई साहेब की आज्ञा से** अनुपम मिशन से **पू. उत्पलभाई, पू. अशोकभाई, पू. राजुभाई, पू. सौम्यभाई, पू. राहुलभाई, पू. तुषारभाई, पू. कुणालभाई** और दिल्ली से **पू. राकेशभाई, पू. हृदय** एवं **पू. डॉ. दिव्यांग** ने मोगरी-अनुपम मिशन के योगी स्वर मंदिर स्टूडियो में, नए बदलाव के साथ रिकॉर्डिंग करके भक्ति अदा दी।

उत्तर भारत के सभी मुक्त **आरती एवं श्लोकों** से सुबह-सायं, घर-परिवार को दिव्यता से भर दें—ऐसी मंगल भावना से **प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्य** वर्ष के अवसर पर **संतभगवंत साहेबजी** की आज्ञा से **प.पू. गुरुजी** की स्तुति वंदना समाविष्ट करके '**साधु पर्व**'**–2022** के पावन पर्व पर '**आरती**' को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं।

अनुक्रमणिका

प्रातः आरती

1. आरती 7-8
2. दंडवत् करते हुए बोलने के श्लोक 9
3. दो हाथ जोड़ कर बोलने के गुणातीत परंपरा के श्लोक 9-11
4. आशीष याचना 12
5. गुरुपरंपरा का जयनाद 13

संध्या आरती

1. गोड़ी— ★ संत समागम कीजे... 14
   ★ संत परम हितकारी... 15
   ★ हरि भजतां सुख होय... 16
   ★ यूं ही जन्म गुमात... 17
2. आरती 18-19
3. धुन—रामकृष्ण गोविंद... स्वामिनारायण... 20
4. प्रार्थना—निर्विकल्प उत्तम अति... 21
5. दंडवत् करते हुए बोलने के श्लोक 22
6. दो हाथ जोड़ कर बोलने के श्लोक 23-26
7. आशीष याचना 27
8. गुरुपरंपरा एवं देवों का जयनाद 28
   ★ विसर्जन प्रार्थना 29
   ★ इतना तो अचूक कर लेना 30

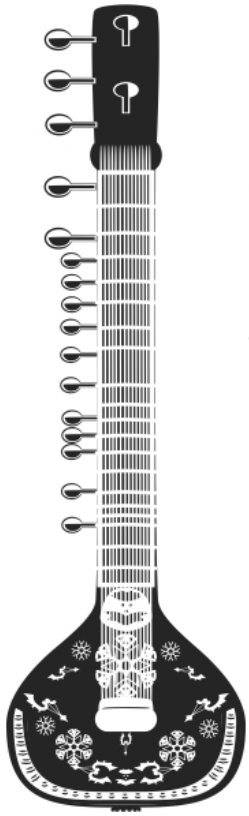

प्रातः आरती

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय!

नीराजनं गृहाणेश पञ्चवर्ति-समन्वितम्।
तेजो राशिर्मया दत्तो लोकानन्द-कर प्रभो।।
श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडल सहिताय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु ... (2), जय अक्षरधामी.....
जय जय सद्गुरु स्वामी...

चरणसरोज तुम्हारे, वंदूँ कर जोरी, प्रभु वंदूँ कर जोरी...
चरन में शीश धरन से... (2), मिटती दुःख-होरी...
जय जय सद्गुरु स्वामी...

नारायण नरभ्राता, द्विजकुल तनधारी, प्रभु द्विजकुल तनधारी...
पामर पतित उबारे... (2), अगणित नर-नारी...
जय जय सद्गुरु स्वामी...

नित्य नित्य नौतम लीला, करते अविनाशी, प्रभु प्यारे अविनाशी...
अड़सठ तीरथ चरन में... (2), कोटि गया काशी...
जय जय सद्गुरु स्वामी...

पुरुषोत्तम प्रगट के, दर्शन जो भी करे, प्रभु दर्शन जो भी करे...
काल-करम से छूटे ... (2), कुटुंब सहित वो तरे.....
जय जय सद्गुरु स्वामी...

करुणानिधि ये तेरी करुणा रंग लाई, प्रभु करुणा रंग लाई...
मुक्तानंद न संशय ... (2), मुक्ति सुगम पाई .....
जय जय सद्गुरु स्वामी...

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु... (2), जय अक्षरधामी.....
जय जय सद्गुरु स्वामी....**-3**

दंडवत् करते हुए बोलने के श्लोक

कृपा करो मुझ पर प्रभु, सुखनिधि सहजानंद;
कीर्तन नित तेरा करुँ, बुद्धि देहु भगवंत।

अक्षर पुरुषोत्तम प्रगट भये, लिया मनुज अवतार;
अनेक जीव उद्धार हित, जन-जन के करतार।

दो हाथ जोड़ कर बोलने के श्लोक

प्रकटे कौशल देश वेश बटु धर, तीर्थों में घूमे अनंत,
रामानंद मिले स्वधर्म स्थापा, यज्ञादि कीन्हे महंत।
भव्य धाम रचे, रहे गढ़पुरे, दो देश गद्दी करी,
अंतर्धान हुए नहीं प्रगट हैं, 'गुणातीत' से **'हरि'**।।01।।

जो हैं अक्षरधाम दिव्य हरि का, जामें बसे मुक्त हैं,
माया पार करें अनंत जीव को, जो मोक्ष का द्वार हैं।
ब्रह्मांड अणुतुल्य रोम दिसते, सेवे 'परब्रह्म' को,
ऐसे अक्षरब्रह्म को नित नमूं, **'गुणातीतानंद'** जो।।02।।

जाके नाम रटन से, मलिन वे संकल्प निर्मूल हुए,
जाके आश्रय से समूल सबके, संसार-फेरे टले।
जाकी कीर्ति दिग्-दिगंत बिखरी, गायें सभी चाव से,
ऐसे **'यज्ञपुरुषदास'** चरणे, वंदूं सदा भाव से।।03।।

वाणी अमृत ज्यों भरी शहद-सी, संजीवनी सृष्टि की,
दृष्टि में भरी दिव्यता निरखते, सुदिव्य भक्तों सभी।
दिल में प्रेम भरा मीठा जननी-सा, शोभे सदा हास से,
ऐसे '**ज्ञानजी योगीराज**' गुरु को, वंदूं सदा भाव से।।04।।

जाकी अमृतवाणी तो बही सदा, साक्षात् महिमा रूपे,
ब्राह्मीस्थिति ने अहो! लीन किये, सुभव्य अक्षर पदे।
शरणागत निज अल्प जीव सब के, श्रेयार्थ तत्पर रहे,
'**काका**' स्नेहलसिंधु दिव्य विभु को, हृदय तो वंदन करे।।05।।

जाकी वाणी में सदा ही बही, सुरावली ब्रह्म की,
किन्तु हो अज्ञात अल्प समीपे, रसबस सभी में रहें।
जियें जो अलमस्त स्वामिश्रीजी में, हैं मोक्षदाता अपि,
'**पप्पा**' योगीस्वरूप विभु चरणे, झुके रहें भाव से।।06।।

सोहे सद्गुणपूर्ण जो सरल व, जक्त से अनासक्त हैं,
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभय की, कृपा के जो पात्र हैं।
धारी धर्मधुरा समुद्र-सम है, गंभीर जो ज्ञान से,
'**नारायणस्वरूपदास**' गुणी को, वंदूं अहो! भाव से।।07।।

सोहे सौम्य मुखारविंद हंसता, नेत्रे अमी बरसते,
वाणी तो महिमाभरी मृदु अरु, हिया हरि धारते।

योगीराज प्रमुखजी हृदय से, जाके गुणे रीझते,
वंदू संत **महंतस्वामी** गुरु जो, कल्याणदाता मिले।।08।।

दीक्षा अर्पी अहो गुणातीत-सी, जाको गुरु 'योगी' ने,
काकाजी और आप दिव्य द्वय का, अद्वैत अनूठा ही है।
भेदे साक्षी अनंत के, स्वरूप ये शास्त्री महाराज का,
ऐसे **'स्वामी हरिप्रसाद'** चरणे, वंदन सदा हम करें।।09।।

निष्ठा तो परिपूर्ण अद्‌भुत अहो! जाकी 'प्रगट' में दिसे,
मूर्ति सिद्धदशा अनादि की खरी, व धैर्य साक्षात् बसे।
प्रासादे निज धाम चैतन्य में, स्वामी बिराजी गये,
'स्वामी अक्षर के विहारी' चरणे, वंदें सभी भाव से।।10।।

जो साक्षात् महिमाभरा स्वरूप व, आनंद की मूरत हैं,
तेजस्वी शूरवीर वत्सल अति, स्वामिश्रीजी धाम हैं।
स्वाश्रयी कर्मयोगे अनुपम, स्थापी परम साधना,
भागी अहो! योगी के, संतभगवंत **'साहेब'** को वंदना।।11।।

जाकी बुद्धि तो सुदिव्य बनी अहो! योगी कृपा पाने से,
किया सेवन काकाजी का, 'स्वरूप' सभी राज़ी किये।
जाकी देह गुणातीत-सी दीसे, मगन मूर्ति में रहें,
गौरव काका-पप्पा के, **'गुरुजी'** को नित वंदन करें।।

मुक्तों के सुख-दुःख के भागी, कुटुंबभाव जगाते जो,
लुभावनी मूर्ति तो तेरी, मोह जगत का मिटावे जो।
गुरुभक्ति अनूठी तेरी, प्रत्यक्ष करे काकाजी को,
रीति-नीति अनोखी जाकी, **'गुरुजी'** को वंदन अहो!।12।।

जो ध्यान धरे श्रीजी का हर पल, चर्चा ब्रह्म भाव की,
मूर्ति में रह कर जो गायें महिमा, श्रीजी के स्वरूप की।
दृष्टि जिनकी काकाजी सम, अनुग्रह अनूठा करे,
'दिनकर' दिव्य स्वरूप के, चरणों में सर्वदा हम रहें।।13।।

आशीष याचना

ब्रह्मरूप से श्री हरि के, चरण-अनुरागी बनें।
आशीष-आश्रय दें हमें, यह याचना करबद्ध करें।
स्वामिनारायण..... धुन

गुरुपरंपरा का जयनाद

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय!
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय!
गुणातीतानंदस्वामी महाराज की जय!
गोपालानंदस्वामी महाराज की जय!
शास्त्रीजी महाराज की जय!
योगीजी महाराज की जय!
काकाजी महाराज की जय!
पप्पाजी महाराज की जय!
प्रमुखस्वामी महाराज की जय!
महंतस्वामी महाराज की जय!
हरिप्रसादस्वामी महाराज की जय!
अक्षरविहारीस्वामी महाराज की जय!
संतभगवंत साहेबजी की जय!
प्रत्यक्ष धाम-धामी मुक्तों की जय!
समग्र गुणातीत समाज की जय!

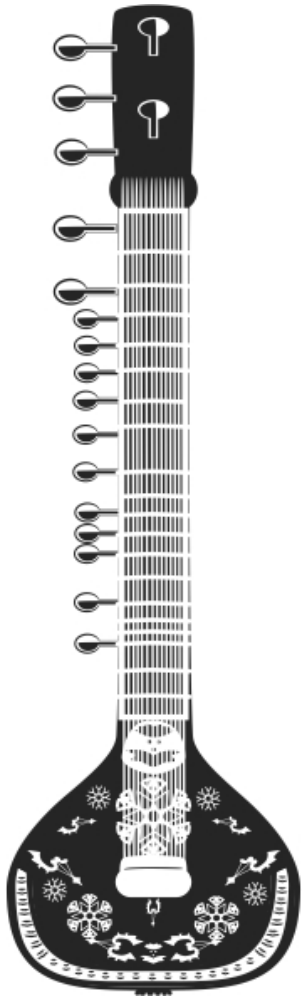

संध्या आरती

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय!

गोड़ी

पद-1

संत समागम कीजे हो निशदिन...संत समागम
मान तजी संतन के मुख से -2, प्रेम सुधारस पीजे,
हो प्रेम सुधारस पीजे, हो निशदिन संत समागम,
संत समागम कीजे हो निशदिन... संत समागम
अंतर कपट मेटके अपनो -2, ले उनकुं मन दीजे,
हो ले उनकुं मन दीजे, हो निशदिन संत समागम,
संत समागम कीजे हो निशदिन... संत समागम
भवदुःख टळे बळे सब दुष्कृत -2, सबविधि कारज सीजे,
हो सबविधि कारज सीजे, हो निशदिन संत समागम,
संत समागम कीजे, हो निशदिन... संत समागम
'ब्रह्मानंद' कहे संत की सौबत -2, जन्म सुफल करी लीजे,
हो जन्म सुफल करी लीजे, हो निशदिन संत समागम,
संत समागम कीजे हो निशदिन... संत समागम।

पद-2

संत परम हितकारी, जगत मांही...संत परम
प्रभु पद प्रगट करावत प्रीति -2, भरम मिटावत भारी,
हो भरम मिटावत भारी, जगत मांही संत परम,
संत परम हितकारी, जगत मांही... संत परम
परम कृपालु सकळ जीवन पर -2, हरिसम सब दुःखहारी,
हो हरिसम सब दुःखहारी,
जगत मांही संत परम,
संत परम हितकारी, जगत मांही... संत परम,
त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी -2, रीत जगत से न्यारी,
हो रीत जगत से न्यारी, जगत मांही संत परम...
संत परम हितकारी, जगतमांही... संत परम
'ब्रह्मानंद' कहे संत की सौबत -2, मिलत है प्रगट मुरारी,
हो मिलत है प्रगट मुरारी,
जगत मांही संत परम,
संत परम हितकारी, जगत मांही... संत परम।

पद-3

हरि भजतां सुख होय, समझ मन... हरि भजतां
हरि समरन बिन मूढ़ अज्ञानी -2, उमर दीनी खोय,
हो उमर दीनी खोय, समझ मन हरि भजता,
हरि भजता सुख होय, समझ मन... हरि भजता
मात पिता जुवती सुत बांधव -2, संग चलत नहीं कोय,
हो संग चलत नहीं कोय, समझ मन हरि भजता,
हरि भजता सुख होय, समझ मन... हरि भजता,
क्युं अपने शिर लेत बुराई -2, रहना है दिन दोय,
हो रहना है दिन दोय, समझ मन हरि भजता,
हरि भजता सुख होय, समझ मन... हरि भजता,
'ब्रह्मानंद' कहे हरिने भजी ले -2, हित की कहत हुं तोय,
हो हित की कहत हुं तोय, समझ मन हरि भजता,
हरि भजता सुख होय, समझ मन... हरि भजता।

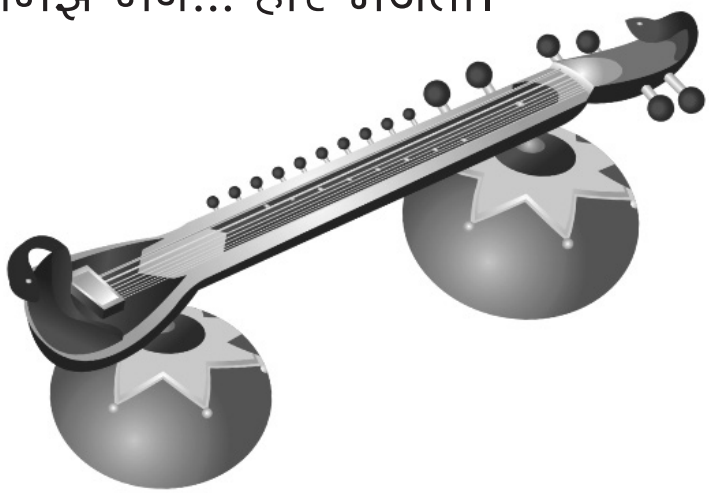

पद-4

यूं ही जन्म गुमात, भजन बिन...यूं ही
समझ समझ नर मूढ़ अज्ञानी -2, काळ निकट चली आत,
हो काळ निकट चली आत, भजन बिन यूं ही,
यूं ही जन्म गुमात, भजन बिन... यूं ही,
भयोरी बेहाल फिरत है निशदिन -2, गुण विषयन के गात,
हो गुण विषयन के गात, भजन बिन यूं ही,
यूं ही जन्म गुमात, भजन बिन... यूं ही,
परमारथ को राह न प्रीछत -2, पाप करत दिन रात,
हो पाप करत दिन रात, भजन बिन यूं ही,
यूं ही जन्म गुमात, भजन बिन... यूं ही,
'ब्रह्मानंद' कहे तेरी मूरख -2, आयुष्य वृथा ही जात,
हो आयुष्य वृथा ही जात, भजन बिन यूं ही...
यूं ही जन्म गुमात, भजन बिन... यूं ही

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय!

नीराजनं गृहाणेश पञ्चवर्ति-समन्वितम्।
तेजो राशिर्मया दत्तो लोकानन्द-कर प्रभो।।
श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडल सहिताय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

आरती

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,

सहजानंद दयालु ... (2), जय अक्षरधामी.....

जय जय सद्गुरु स्वामी...

चरणसरोज तुम्हारे, वंदूँ कर जोरी, प्रभु वंदूँ कर जोरी...

चरन में शीश धरन से... (2), मिटती दुःख-होरी...

जय जय सद्गुरु स्वामी...

नारायण नरभ्राता, द्विजकुल तनधारी, प्रभु द्विजकुल तनधारी...

पामर पतित उबारे... (2), अगणित नर-नारी...

जय जय सद्गुरु स्वामी...

नित्य नित्य नौतम लीला, करते अविनाशी, प्रभु प्यारे अविनाशी...
अड़सठ तीरथ चरन में... (2), कोटि गया काशी...
जय जय सद्गुरु स्वामी...

पुरुषोत्तम प्रगट के, दर्शन जो भी करे, प्रभु दर्शन जो भी करे...
काल-करम से छूटे ... (2), कुटुंब सहित वो तरे.....
जय जय सद्गुरु स्वामी...

करुणानिधि ये तेरी करुणा रंग लाई, प्रभु करुणा रंग लाई...
मुक्तानंद न संशय ... (2), मुक्ति सुगम पाई .....
जय जय सद्गुरु स्वामी...

जय सद्गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु... (2), जय अक्षरधामी.....
जय जय सद्गुरु स्वामी....**-3**

धुन

रामकृष्ण गोविंद, जय जय गोविंद... -2
हरे राम गोविंद, जय जय गोविंद... -2
नारायण हरे, स्वामिनारायण हरे... -2
स्वामिनारायण हरे, स्वामिनारायण हरे...
कृष्णदेव हरे, जय जय कृष्णदेव हरे... -2
जय जय कृष्णदेव हरे, जय जय कृष्णदेव हरे!
वासुदेव हरे, जय जय वासुदेव हरे... -2
जय जय वासुदेव हरे; जय जय वासुदेव हरे!
वासुदेव गोविंद, जय जय वासुदेव गोविंद... -2
जय जय वासुदेव गोविंद! जय जय वासुदेव गोविंद!
राधे गोविंद, जय राधे गोविंद... - 2
वृंदावनचंद्र जय, राधे गोविंद... -2
माधव मुकुंद, जय माधव मुकुंद... -2
आनंदकंद, जय माधव मुकुंद... -2
स्वामिनारायण! स्वामिनारायण! स्वामिनारायण!
स्वामिनारायण! स्वामिनारायण..... (धुन)

हरे...

प्रार्थना

निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तव घनश्याम।
माहात्म्यज्ञानयुक्त भक्ति तव, एकांतिक सुखधाम।।01।।

मोहि में तव भक्तपनो, तामें कोई प्रकार।
दोष न रहे कोई जात को, सुनियो धर्मकुमार।।02।।

तुमारो तव हरि भक्त को, द्रोह कबु नहिं होय।
एकांतिक तव दास को, दीजे समागम मोय।।03।।

नाथ निरंतर दर्शन तव, तव दासन को दास।
एहि मांगु करी विनय हरि, सदा राखियो पास।।04।।

हे कृपालु! हे भक्तपते! भक्तवत्सल सुनो बात।
दयासिंधो स्तवन करी, मागुं वस्तु सात।।05।।

सहजानंद महाराज के, सब सत्संगी सुजाण।
ताकुं होय दृढ़ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण।।06।।

सो पत्री में अति बड़े, नियम एकादश जोय।
ताकी विक्ति करत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय।।07।।

हिंसा न करनी जंतु की, परस्त्रिया संग को त्याग।
मांस न खावत मद्यकुं, पीवत नहिं बडभाग।।08।।

विधवाकुं स्पर्शत नहि, करत न आत्मघात।
चोरी न करनी काहुं की, कलंक न कोईकुं लगात।।09।।

निंदत नहिं कोय देवकुं, बिन खपतो नहि खात।
विमुख जीव के वदन से, कथा सुनी नहि जात।।10।।

एही धर्म के नियम में, वरतो सब हरिदास।
भजो श्रीसहजानंद पद, छोड़ी और सब आस।।11।।

रही एकादश नियम में, करो श्री हरिपद प्रीत।
प्रेमानंद कहे धाम में, जाओ निःशंक जगजीत।।12।।

दंडवत् करते हुए बोलने के श्लोक

कृपा करो मुझ पर प्रभु, सुखनिधि सहजानंद;
कीर्तन नित तेरा करुँ, बुद्धि देहु भगवंत।

अक्षर पुरुषोत्तम प्रगट भये, लिया मनुज अवतार;
अनेक जीव उद्धार हित, जन-जन के करतार।

दो हाथ जोड़ कर बोलने के श्लोक

प्रकटे कौशल देश वेश बटु धर, तीर्थों में घूमे अनंत,
रामानंद मिले स्वधर्म स्थापा, यज्ञादि कीन्हे महंत।
भव्य धाम रचे, रहे गढ़पुरे, दो देश गद्दी करी,
अंतर्धान हुए नहीं प्रगट हैं, 'गुणातीत' से **'हरि'**।।01।।

जो उत्पत्ति एवं स्थिति लय करे, वेदों स्तुति उच्चरे,
जाके रोमसुच्छिद्र में अणुसम, ब्रह्मांड कोटि फिरें।
माया काल रवि शशि सुरगण, आज्ञा न लोपे क्षण,
ऐसे अक्षरधाम के अधिपति, **'श्री स्वामिनारायण'**।।02।।

आये अक्षरधाम से अवनि पे, ऐश्वर्य-मुक्तों सही,
सोहे अक्षर साथ सुंदर छबि, लावण्य तेजोमयी।
कर्ता दिव्य सदा रहे प्रकट जो, साकार सर्वोपरि,
'सहजानंद'! कृपालु को नित नमूं, सर्वावतारी हरि।।03।।

जो हैं अक्षरधाम दिव्य हरि का, जामें बसे मुक्त हैं,
माया पार करें अनंत जीव को, जो मोक्ष का द्वार हैं।
ब्रह्मांड अणुतुल्य रोम दिसते, सेवे 'परब्रह्म' को,
ऐसे अक्षरब्रह्म को नित नमूं, **'गुणातीतानंद'** जो।।04।।

महिमारूपी ध्यान का जिन्हें, अखंड साक्षात्कार है,
परम एकांतिकी स्थिति, आनंद 'परम' का सहज है।
श्रीहरि की महिमाचर्चा, का ही जिन्हें व्यसन है,
शिरोमणि परमहंसों में, **गुणातीत** को कोटि नमन है।।05।।

साधा अष्टांगयोग, प्रगट हरि की, प्रीति हेतु प्रयत्ने,
शोधे वेदांत तत्त्व, सकल ग्रह लिये, सिंधु से जैसे रत्न।
आधि-व्याधि-उपाधि, प्रणत जन की, टाल ले ली समाधि,
'गोपालानंदस्वामी', सकल गुण निधि, वंदूं माया अबाधि।।06।।

श्रीमन्निर्गुणमूर्ति सुंदर वपु, ज्ञानोपदेशे भरे,
आश्रय हैं सकल साधु गुण के, सर्वज्ञ माया परे।
समर्थ सुपूर्ण भक्त निज के, हैं दोषहंता प्रभु,
ऐसे **'प्रागजी' ब्रह्मरूप** गुरु को वंदन करूँ, हे विभु।।07।।

इति गुणनिधिवंता, **'भक्त जागा'** धिमंता,
भूमि पर एहि संता, पंच दोषादिहंता।
श्रितहित अनुसरता, मूल अज्ञान हरता,
घन सम सुख करता, जनोपदेशे विचरता।।08।।

श्री राजकोट नगरे विमले बसे जो,
श्रीजी स्वरूप महिमा हृदये धरे जो।
देते प्रकाश मूल अक्षर का प्रतापी,
त्वां **'कृष्णजी'** गुरुवरं शरणं प्रपद्ये।।09।।

जाके नाम रटन से, मलिन वे संकल्प निर्मूल हुए,
जाके आश्रय से समूल सबके, संसार-फेरे टले।
जाकी कीर्ति दिग्-दिगंत बिखरी, गायें सभी चाव से,
ऐसे **'यज्ञपुरुषदास'** चरणे, वंदूं सदा भाव से।।10।।

वाणी अमृत ज्यों भरी शहद-सी, संजीवनी सृष्टि की,
दृष्टि में भरी दिव्यता निरखते, सुदिव्य भक्तों सभी।
दिल में प्रेम भरा मीठा जननी-सा, शोभे सदा हास से,
ऐसे **'ज्ञानजी योगीराज'** गुरु को, वंदूं सदा भाव से।।11।।

जाकी अमृतवाणी तो बही सदा, साक्षात् महिमा रूपे,
ब्राह्मीस्थिति ने अहो! लीन किये, सुभव्य अक्षर पदे।
शरणागत निज अल्प जीव सब के, श्रेयार्थ तत्पर रहे,
'काका' स्नेहलसिंधु दिव्य विभु को, हृदय तो वंदन करे।।12।।

जाकी वाणी में सदा ही बही, सुरावली ब्रह्म की,
किन्तु हो अज्ञात अल्प समीपे, रसबस सभी में रहें।
जियें जो अलमस्त स्वामिश्रीजी में, हैं मोक्षदाता अपि,
'पप्पा' योगीस्वरूप विभु चरणे, झुके रहें भाव से।।13।।

सोहे सद्गुणपूर्ण जो सरल व, जक्त से अनासक्त हैं,
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभय की, कृपा के जो पात्र हैं।

धारी धर्मधुरा समुद्र-सम है, गंभीर जो ज्ञान से,
'नारायणस्वरूपदास' गुणी को, वंदूं अहो! भाव से।।14।।

सोहे सौम्य मुखारविंद हंसता, नेत्रे अमी बरसते,
वाणी तो महिमाभरी मृदु अरु, हिया हरि धारते।
योगीराज प्रमुखजी हृदय से, जाके गुणे रीझते,
वंदू संत **महंतस्वामी** गुरु जो, कल्याणदाता मिले।।15।।

दीक्षा अर्पी अहो गुणातीत-सी, जाको गुरु 'योगी' ने,
काकाजी और आप दिव्य द्वय का, अद्वैत अनूठा ही है।
भेदे साक्षी अनंत के, स्वरूप ये शास्त्री महाराज का,
ऐसे **'स्वामी हरिप्रसाद'** चरणे, वंदन सदा हम करें।।16।।

निष्ठा तो परिपूर्ण अद्भुत अहो! जाकी 'प्रगट' में दिसे,
मूर्ति सिद्धदशा अनादि की खरी, व धैर्य साक्षात् बसे।
प्रासादे निज धाम चैतन्य में, स्वामी बिराजी गये,
'स्वामी अक्षर के विहारी' चरणे, वंदें सभी भाव से।।17।।

जो साक्षात् महिमाभरा स्वरूप व, आनंद की मूरत हैं,
तेजस्वी शूरवीर वत्सल अति, स्वामिश्रीजी धाम हैं।
स्वाश्रयी कर्मयोगे अनुपम, स्थापी परम साधना,
भागी अहो! योगी के, संतभगवंत **'साहेब'** को वंदना।।18।।

जाकी बुद्धि तो सुदिव्य बनी अहो! योगी कृपा पाने से,
किया सेवन काकाजी का, 'स्वरूप' सभी राज़ी किये।
जाकी देह गुणातीत-सी दीसे, मगन मूर्ति में रहें,
गौरव काका-पप्पा के, '**गुरुजी**' को नित वंदन करें।।

मुक्तों के सुख-दुःख के भागी, कुटुंबभाव जगाते जो,
लुभावनी मूर्ति तो तेरी, मोह जगत का मिटावे जो।
गुरुभक्ति अनूठी तेरी, प्रत्यक्ष करे काकाजी को,
रीति-नीति अनोखी जाकी, '**गुरुजी**' को वंदन अहो!।19।।

जो ध्यान धरे श्रीजी का हर पल, चर्चा ब्रह्म भाव की,
मूर्ति में रह कर जो गायें महिमा, श्रीजी के स्वरूप की।
दृष्टि जिनकी काकाजी सम, अनुग्रह अनूठा करे,
'**दिनकर**' दिव्य स्वरूप के, चरणों में सर्वदा हम रहें।।20।।

आशीष याचना

ब्रह्मरूप से श्री हरि के, चरण-अनुरागी बनें।
आशीष-आश्रय दें हमें, यह याचना करबद्ध करें।
स्वामिनारायण..... धुन

गुरुपरंपरा एवं देवों का जयनाद

श्री स्वामिनारायण भगवान की जय!
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय!
गुणातीतानंदस्वामी महाराज की जय!
गोपालानंदस्वामी महाराज की जय!
भगतजी महाराज की जय!
जागास्वामी महाराज की जय!
कृष्णजी अदा महाराज की जय!
शास्त्रीजी महाराज की जय!
योगीजी महाराज की जय!
काकाजी महाराज की जय!
पप्पाजी महाराज की जय!
प्रमुखस्वामी महाराज की जय!
महंतस्वामी महाराज की जय!
हरिप्रसादस्वामी महाराज की जय!
अक्षरविहारीस्वामी महाराज की जय!
संतभगवंत साहेबजी की जय!
प्रत्यक्ष धाम-धामी मुक्तों की जय!
समग्र गुणातीत समाज की जय!
लक्ष्मीनारायण देव की जय!

नरनारायण देव की जय!
राधारमण देव की जय!
सियावर रामचंद्र की जय!
गौरीशंकर महादेव की जय!
कष्टभंजन हनुमानजी की जय!
विघ्नहर्ता मंगलमूर्ति गणपति देव की जय!

विसर्जन प्रार्थना

इसी जनम में, हम पर भगवन्, ऐसा अनुग्रह कर दो।
भाग्य से जन्म मिला भारत में, सार्थक इसको कर दो।
छोटे-बड़े क्रियायोग सारे, मूर्ति में ही रह कर हो,
भूतकाल अब तो भूलें
चिन्ता भविष्य की छोड़ें
कल आयेगा नहीं
वर्तमान में स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव से वर्तें,
जीयें प्रत्यक्ष की छावनी के हम सैनिक बन के।
मुक्तों को दिव्य मानें
तुम्हें कर्ता-हर्ता जानें
प्राप्ति की मस्ती हो
उद्यम यही आपका रहता, ब्रह्मरूप हो हम वर्तें।
धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद!
हे चैतन्यशिल्पी तुम्हें...

इतना तो अचूक कर लेना

1. सुबह और सायं—दो बार भजन।
2. रात को प्रायश्चित रूप प्रार्थना।
3. किसी का दोष, किसी की क्रिया, किसी का स्वभाव देखे बिना '**नौकार मंत्र**' रट कर, साक्षीभाव से सभी क्रियायें करना, किन्तु गुण के भाव में स्थित रह कर नहीं।

दिल की सच्चाई और प्रामाणिकता से एक मिनिट भी की गई प्रार्थना (प्रभु को) पहुँचती है और रमणीय पंचविषयों की तीव्र इच्छा, ग़फलत और अस्मिता को पिघाल ही देती है।

सभी क्रियायें '**स्वीच ऑन**' करके, प.पू. बापा में से जो आये वही करेंगे, तो ब्राह्मीशक्ति हमारे आगे-पीछे काम करती दिखाई देगी, अनुभव में आयेगी और आश्चर्यकारक घटना बनेगी।

—गुरुहरि काकाजी महाराज

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार:फेज़-III,
दिल्ली-110 052 (भारत) • दूरभाष: 4709 1281
ई-मेईल : taaddev@ydsd.org

Mobile App.

You Tube Channel

GET IT ON Google Play

APSM

Available on the App Store